मृच्छकटिकम्

वसन्तसेना का चरित्र-चित्रण

मृच्छकटिक में वसन्तसेना अनुपम सुन्दरी, विविध कला-मर्मज्ञ, नवयौवना, पवित्र प्रेमिका और स्त्रीसुलभ गुण-समलंकृत गणिका के रूप में चित्रित की गई है। उसका व्यक्तित्व प्रत्येक को प्रभावित करने में समर्थ है।

1- व्यक्तित्व : नवयौवना, परमरूपवती और विलक्षण आचरण वाली वसन्तसेना का व्यक्तित्व अति आकर्षक है। प्रथम अंक में शकार उसके विविध (दस) नामों की चर्चा करता है। अपने घर पर आयी हुई वसन्तसेना को देखकर चारुदत्त उसकी प्रशंसा करता है-

छादिता भरदभ्रेण-चन्द्रलेखेव भासते।

2- वेश्या की अपेक्षा गणिका का वैशिष्ट्य : 'वेश्या' शब्द सामान्यतया प्रयुक्त होता है; परन्तु 'गणिका' शब्द का प्रयोग सम्मानित तथा उच्चस्तरीय वेश्या के लिए प्रयुक्त होता है। यहाँ वसन्तसेना को गणिका के रूप में चित्रित किया गया है।

3- अतुल वैभवशाली : वसन्तसेना ~~अ~~ उज्जयिनी की एक अतुल वैभव-सम्पन्न गणिका है। चतुर्थ अंक में विदूषक ने ~~उसके~~ उसके भवनों और उसमें विद्यमान पदार्थों का वर्णन करते हुए उसे कुबेर-भवन का अंश बतलाया है

4- निर्लोभता : गणिका होने पर वसन्तसेना में लोभ नहीं है। वह धन की चिन्ता नहीं करती है। द्वितीय अंक में जब मदनिका को चारुदत्त के साथ वसन्तसेना के प्रेम का पता चलता है, तब वह वसन्तसेना से कहती है कि चारुदत्त तो निर्धन हैं- 'दरिद्रः खलु सः श्रूयते।" इस पर वसन्तसेना चारुदत्त के साथ निर्लोभ प्रेम की बात कहती है।

Scanned with CamScanner

जुआ में कर्ज लेकर हारा हुआ संवाहक जब वसन्तसेना के पास पहुँचता है और पीछे-पीछे कर्जदार माथुर और द्यूतकर पहुँचते हैं। वह संवाहक को चारुदत्त का सेवक जानकर तत्काल सोने के कड़े भेजवा कर उसे (संवाहक को) ऋणमुक्त करा देती है।

5-प्रतिभाशाली : वसन्तसेना एक प्रतिभाशाली गणिका है। उसे विविध कलाओं का अच्छा ज्ञान है। वह किसी बात का तात्पर्य समझने में अत्यन्त कुशल है। प्रथम अंक में जब वह शकारादि से छिप जाती है, उस समय विट वसन्तसेना से कहता है कि माला से निकली हुई सुगन्ध तथा शब्द करने वाले नूपुर तुम्हें सूचित कर देंगे अर्थात् तुम्हारा पता बता देंगे। यह सुनकर वसन्तसेना अपनी माला और पैर के नूपुर को हटा देती है। यह उसकी प्रतिभा द्योतित होती है।

6-चारुदत्त से अटूट प्रेमभावना : कामदेवायतन उद्यान में जब से चारुदत्त को देखा है, तभी से वह उसे पर आसक्त हो जाती है। वह हर मूल्य पर चारुदत्त को पाना चाहती है। प्रथम अंक से शकार की बातों से उसका चारुदत्त के साथ प्रेम सम्बन्ध ज्ञात हो जाता है। उसके इस प्रेम के लिए जब शकारादि उससे कहते हैं तो वह अपने को गर्वान्वित समझती है। जुआ में हारकर ऋणी बना हुआ संवाहक जब वसन्तसेना के पास जाता है, तब वह उसे चारुदत्त का सेवक जानकर बहुत प्रसन्न होती है और स्नेह भाव प्रदर्शित करके सोने के कड़े भेजवा कर संवाहक को ऋणमुक्त करा देती है इससे वसन्तसेना की चारुदत्त के प्रति अटूट प्रेमभावना दिखाई देती है।

7-द्यूता के प्रति आदर भावना : वसन्त सेना अपनी सामाजिक मर्यादा के प्रति सदैव सावधान रहती है। जब वसन्तसेना के गहनों की चोरी के बदले में चारुदत्त अपनी पत्नी द्यूता को बहुमूल्य 'रत्नावली' उसके पास भेजता है, तब वह वसन्तसेना उस 'रत्नावली' नामक बहुमूल्य माला को स्वीकार तो कर लेती है जिससे चारुदत्त को ठेस न पहुँचे। परन्तु 'द्यूता' के प्रति

Scanned with CamScanner

पृष्ठ-3

सम्मान प्रकट करने के लिए स्वयं वसन्तसेना 'रत्नावली' को वापस लौटाने के लिए 'द्यूता' के घर जाती है तथा वह उस रात द्यूता के घर में ही रहती है। इस प्रसंग से द्यूता के प्रति वसन्तसेना की अतिशय सम्मान-भावना प्रकट होती है।

8- धर्माचरण में रुचि : गणिका होने पर भी वह सामान्यतया नित्य स्नान कर देव-पूजन आदि सम्पन्न करती है। प्रतिदिन देव-पूजन करने के कारण ही द्वितीय अंक में जब माता की आज्ञा होती है कि वसन्तसेना स्नान करके देवताओं की पूजा सम्पन्न करे, तब चारुदत्त के प्रति उद्विग्नचित्त होने के कारण वह चेटी से कह देती है कि माताजी से कह दो कि आज मैं स्नान नहीं करूँगी। आज के दिन ब्राह्मण ही पूजा को सम्पन्न कर दे।

9- उपसंहार : मृच्छकटिक में वसन्तसेना एक अनुपम सुन्दरी, नव-यौवना गणिका के रूप में चित्रित होने पर भी वह अति उदार, सरल, भावुक, बड़ों का सम्मान करने वाली, छोटों पर स्नेह करने वाली, सभी के सुख-दुःख को समझने वाली, पवित्र प्रेम की उपासिका और कुलीन स्त्री के समान आचरण करने वाली है। गणिका होने पर भी उसे धन की लिप्सा नहीं है। उसका व्यवहार सभी को प्रभावित करने वाला है।

Scanned with CamScanner